महाराणा प्रताप महाविद्यालय ग्रन्थालय जंगल धूसड़, गोरखपुर 10-5-24

SAN308 / SAN310 / SAN312 / SAN314 / SAN316

B.A. (VIth SEMESTER) EXAMINATION, 2023-24

SANSKRIT

GROUP - 1 : SAN 308 (YOGA EVAM PRAKRITIK CHIKITSA-II)

GROUP - 2 : SAN 310 (AYURVEDA EVAM SWASTHYA VIGYAN-II)

GROUP - 3 : SAN 312 (BHARTIYA VASTUSHASTRA-II)

GROUP - 4 : SAN 314 (JYOTISHSHASTRA KE MOOLBHOOT SIDHANT-II)

GROUP - 5 : SAN 316 (NITAYANAMITIYIK ANUSHTHAN-II)

(CBCS Mode)

AFFIX PRESCRIBED RUBBER STAMP

Date (तिथि) : ____________________

Paper ID
(To be filled in the OMR Sheet)

5574

अनुक्रमांक (अंकों में) :
Roll No. (In Figures) : | | | | | | | | | | | | | | | |

अनुक्रमांक (शब्दों में) : ______________________________
Roll No. (In Words) : ______________________________

Time : 1:30 Hrs.
समय : 1:30 घण्टे

Max. Marks : 75
अधिकतम अंक : 75

नोट : पुस्तिका में 50 प्रश्न दिये गये हैं, सभी प्रश्न करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 1.5 अंक का होगा।

Important Instructions :

1. The candidate will write his/her Roll Number only at the places provided for, i.e. on the cover page and on the OMR answer sheet at the end and nowhere else.

2. Immediately on receipt of the question booklet, the candidate should check up the booklet and ensure that it contains all the pages and that no question is missing. If the candidate finds any discrepancy in the question booklet, he/she should report the invigilator within 10 minutes of the issue of this booklet and a fresh question booklet without any discrepancy be obtained.

महत्वपूर्ण निर्देश :

1. अभ्यर्थी अपने अनुक्रमांक केवल उन्हीं स्थानों पर लिखेंगे जो इसके लिए दिये गये हैं, अर्थात् प्रश्न पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ तथा साथ दिये गये ओ०एम०आर० उत्तर पत्र पर, तथा अन्यत्र कहीं नहीं लिखेंगे।

2. प्रश्न पुस्तिका मिलते ही अभ्यर्थी को जाँच करके सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि इस पुस्तिका में पूरे पृष्ठ हैं और कोई प्रश्न छूटा तो नहीं है। यदि कोई विसंगति है तो प्रश्न पुस्तिका मिलने के 10 मिनट के भीतर ही कक्ष परिप्रेक्षक को सूचित करना चाहिए और बिना त्रुटि की दूसरी प्रश्न पुस्तिका प्राप्त कर लेना चाहिए।

Group – 1 : SAN 308 (Yoga Evam Prakritik Chikitsa-II)

1. ऋषियों ने वेदमंत्रों का साक्षात्कार किया–
   - (A) धन के माध्यम से
   - (B) योग के माध्यम से
   - (C) बन्दूक के माध्यम से
   - (D) उपर्युक्त किसी के माध्यम से नहीं

2. योग में सम्प्रदायों की संख्या है–
   - (A) 04
   - (B) 10
   - (C) 03
   - (D) कोई नहीं

3. इड़ा–पिंगला नाड़ियों में प्रवाहित 'ह' एवं 'ठ' को कहा जाता है–
   - (A) चन्द्र एवं सूर्य के नाम से
   - (B) राहु एवं केतु के नाम से
   - (C) सोम एवं मंगल के नाम से
   - (D) कोई नहीं

4. 'कुण्डलिनी' प्रधान साधना है–
   - (A) काव्यशास्त्रियों की
   - (B) पुजारियों की
   - (C) योग तान्त्रिकों की
   - (D) हिन्दुओं की

5. पहले उपदेश में महर्षि घेरण्ड ने षट्कर्म का उपदेश दिया–
   - (A) चण्डकापालि को
   - (B) मनु को
   - (C) मम्मट को
   - (D) कोई नहीं

6. घेरण्डसंहिता के द्वितीय उपदेश में विशद निरूपण है–

(A) षट्कर्म का

(B) आसन का

(C) मुद्रा का

(D) उपर्युक्त किसी का नहीं

7. घेरण्डसंहिता के तृतीय उपदेश में निरूपण है–

(A) मुद्रा का

(B) प्रत्याहार का

(C) षट्कर्म का

(D) कोई नहीं

8. घेरण्डसंहिता चतुर्थ उपदेश में निरूपण है–

(A) समाधि

(B) मुद्रा

(C) प्रत्याहार

(D) कोई नहीं

9. श्री शंकर ने आसनों की संख्या बताई है–

(A) दस लाख

(B) चौरासी लाख

(C) आठ

(D) बीस

10. श्रेष्ठ आसनों की कुल संख्या है–

(A) चौरासी

(B) चौरासी लाख

(C) बीस

(D) पचास

11. मनुष्य लोक में सिद्धिप्रद आसनों की संख्या है–

(A) 10

(B) 50

(C) 32

(D) कोई नहीं

12. सर्वश्रेष्ठ आसन है–

(A) सिद्ध

(B) पद्म

(C) स्वास्तिक

(D) उपर्युक्त तीनों

13. मोक्ष लाभ होता है–

(A) सिद्धासन से

(B) मयूरासन से

(C) कुक्कुटासन से

(D) इनमें से कोई नहीं

14. समस्त रोगों का नाश होता है–

(A) सिद्धासन से

(B) पद्मासन से

(C) भद्रासन से

(D) उपर्युक्त किसी से नहीं

15. सिद्धि की प्राप्ति होती हैं–

(A) मयूरासन से

(B) पद्मासन से

(C) कुक्कुटासन से

(D) मुक्तासन से

16. जठराग्नि बढ़ती है और कुण्डलिनी का भी जागरण होता है–

(A) भुजंगासन से

(B) उष्ट्रासन से

(C) कूर्मासन से

(D) कोई नहीं

17. गले की नसों को संकुचित करके ठोड़ी को हृदय में लगाने को कहते हैं–

(A) गोमुखासन

(B) जालन्धर बन्ध

(C) वीरासन

(D) कोई नहीं

18. एक जांघ पर एक चरण रखकर दूसरे चरण को पीछे की ओर निकाल दें इसे कहते हैं–

(A) वीरासन

(B) धनुरासन

(C) जालन्धर बंध

(D) कोई नहीं

19. इस आसन से श्रम दूर होता है और चित्त प्रसन्न होता है–

(A) गरूणासन

(B) पद्मासन

(C) शवासन

(D) कोई नहीं

20. मुर्दे के समान सर्वांग शिथिल करके भूमि पर लेटने का नाम है–

(A) मत्स्यासन

(B) गुप्तासन

(C) शवासन

(D) कोई नहीं

21. मुक्त पद्मासन करके हाथ की कोहनियों से शिर को लपेट कर चित्त लेटने को कहते हैं–

(A) मत्स्यासन

(B) वीरासन

(C) कुक्कुटासन

(D) कोई नहीं

22. दोनों पैरों को पृथ्वी में सीधे फैलाकर, दोनों हाथों को पीठ की तरफ करके दोनों चरणों को पकड़ लें शरीर को तिरछा कर ले इसे कहते हैं–

(A) धनुरासन

(B) वीरासन

(C) गरूणासन

(D) कोई नहीं

23. दोनों पाँवों को पृथ्वी में दण्ड के समान सरल भाव से फैलाकर यत्न से दोनों पाँवों के अंगूठों को पकड़े और दोनों जंघों पर शिर को धर दे, इसे कहते हैं–

(A) वीरासन

(B) भद्रासन

(C) पश्चिममोत्तानासन

(D) कोई नहीं

24. उग्रासन कहते है–

(A) पद्मासन को

(B) पश्चिमोत्तानासन को

(C) कुक्कुटासन को

(D) उपर्युक्त किसी को नहीं

25. प्राकृतिक चिकित्सा होती है–

(A) विद्यालय में

(B) बैंक में

(C) फैक्ट्री में

(D) प्रकृति में

26. दोनों पाँवों को फैलाकर, दोनों अंगूठों को हाथों से पकड़कर जानुओं को शिर पर रखने से होता है–

(A) आलस्य नाश

(B) धन नाश

(C) सुःख नाश

(D) कोई नहीं

27. 'पश्चिमोत्तान' को करने वाले साधक की वायु प्रवाहित होती है–

(A) पूर्व मार्ग में

(B) पश्चिम मार्ग में

(C) उत्तर मार्ग में

(D) कोई भी

28. 'मरूत्सिद्धि' होती हैं–

(A) पश्चिमोत्तानासन से

(B) पद्मासन से

(C) वीरासन से

(D) कोई नहीं

29. अग्नि को बढ़ाता है–

(A) कूर्मासन

(B) उष्ट्रासन

(C) मकरासन

(D) कोई नहीं

30. नीचे को मुख करके लेटें, हृदय को पृथ्वी से लगाकर पैरों को फैला दें, दोनों हाथों से मस्तक को लगा लें, इस आसन को कहते हैं–

(A) मकरासन

(B) कुक्कुटासन

(C) मयूरासन

(D) उपर्युक्त किसी को नहीं

31. दोनों चरण उत्तान करके दोनों घुटनों पर रखें, दोनों हाथों को चित्त करके आसन पर रखें, फिर पूरक के द्वारा वायु को खींचकर कुम्भक करता हुआ नासाग्र भाग को देखे। इस आसन को कहते हैं–

(A) पद्मासन

(B) वज्रासन

(C) योगासन

(D) कोई नहीं

32. घेरण्ड संहिता के अध्ययन है–

(A) 5

(B) 7

(C) 9

(D) 8

33. दाहिनी एड़ी पर गुदा को रखें, उसके वाम भाग से दूसरे पैर को फिराकर रखें और भूमि को स्पर्श करें इसे कहते हैं–

(A) वृषासन

(B) शलभासन

(C) गरूणासन

(D) कोई नहीं

34. व्याधिविनाशकम् का तात्पर्य है–

(A) दुःख की प्राप्ति

(B) दुःख का नाशक

(C) सुख का नाशक

(D) कोई नहीं

35. वायु की संख्या है–

(A) दो

(B) तीन

(C) पाँच

(D) दस

36. प्राण, अपान, नाद, बिन्दु, जीव और परमात्मा के मिलन से जो घटता (बनता) हैं उसे कहते है–

(A) घट या शरीर

(B) प्राण

(C) अपान

(D) कोई नहीं

37. घटस्थ (शरीरस्थ) योगों का वर्णन कहलाता है–

(A) ध्यान योग

(B) ज्ञान योग

(C) घटस्थ योग

(D) कोई नहीं

38. 'योगाभ्यास' करने से होता है–

(A) मोह

(B) तत्वज्ञान

(C) रोग

(D) कोई नहीं

39. हठयोग की क्रियाओं का सर्वाधिक विवरण प्राप्त होता है–

(A) आयुर्वेद में

(B) घेरण्ड सहिता में

(C) चिकित्सा शास्त्र में

(D) उपर्युक्त किसी में नहीं

40. लययोग एवं कुण्डलिनी योग का निरूपण नहीं है–

(A) घेरण्ड संहिता में

(B) शिव संहिता में

(C) पातञ्जलयोगशास्त्र में

(D) कोई नहीं

41. वेद से लेकर पुराण, इतिहास सभी में श्रेष्ठ माना गया हैं–

(A) योग को

(B) काव्य को

(C) मनुष्य को

(D) कोई नहीं

42. परमाणु, प्रकृति, माया आदि तत्वों के योग से रचना हुई है–

(A) विश्व की

(B) सागर की

(C) पर्वत की

(D) कोई नहीं

43. पुरूषार्थ हैं–

(A) पचास

(B) दस

(C) चार

(D) सत्रह

44. योग से आत्मदर्शन करना है–

(A) लौकिक योग

(B) अलौकिक योग

(C) दोनों

(D) (A), (B) दोनों नहीं

45. 'घेरण्ड संहिता' में श्लोकों की संख्या हैं–

(A) 550

(B) 210

(C) 350

(D) कोई नहीं

46. योग दर्शन के प्रणेता है–

(A) कपिल

(B) पतञ्जलि

(C) जैमिनि

(D) कणाद

47. घेरण्ड संहिता के अनुसार आसनों की संख्या है–

(A) 24

(B) 32

(C) 30

(D) 29

48. घेरण्ड संहिता के प्रणेता हैं–

(A) घेरण्ड ऋषि

(B) वाल्मीकि

(C) व्यास

(D) कालिदास

49. उरू का अर्थ है–

(A) पैर

(B) हृदय

(C) हाथ

(D) जाँघ

50. सिद्धासन में अचल दृष्टि से अवलोकन करते हैं–

(A) पैर का

(B) जल का

(C) भ्रूमध्य का

(D) नाक का

*****

Group - 2 : SAN 310 (Ayurveda Evam Swasthya Vigyan -II)

1. 'खुड्डाक' का अर्थ है–

   (A) विस्तृत

   (B) दीर्घ

   (C) अल्पवचन

   (D) अत्यन्त विस्तृत

2. चिकित्सा के पाद है–

   (A) 2

   (B) 4

   (C) 6

   (D) 8

3. चिकित्सा का प्रथम पाद है–

   (A) गुणवान् वैद्य

   (B) गुणवान् द्रव्य

   (C) गुणवान् रोगी

   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

4. चिकित्सा का पाद नहीं है–

   (A) गुणवान् द्रव्य

   (B) गुणवान् उपस्थाता

   (C) गुणवान् रोगी

   (D) गुणवान् स्थल

5. चिकित्सा की आवश्यकता पड़ती है–

   (A) धातु के उत्तम होने पर

   (B) धातु के विकृत होने पर

   (C) धातु के ठीक होने पर

   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

6. वैद्य के गुण हैं–

(A) शास्त्र का अच्छी प्रकार ज्ञान

(B) दक्ष होना

(C) पवित्रता रखना

(D) उपर्युक्त सभी

7. उत्तम औषधि का गुण नहीं है–

(A) औषधियों का अधिक रूप में प्राप्त होना

(B) औषधियों का व्याधिनाश में समर्थ होना

(C) एक ही औषधि में अनेकविध कल्पना की योग्यता होना

(D) औषधियों का रोग नाश में समर्थ नहीं होना

8. उपचारक का गुण है–

(A) सेवा कार्य का पूर्ण ज्ञान

(B) चतुरता

(C) अपने रोगी के प्रति अधिक प्रेम

(D) उपर्युक्त सभी

9. 'उपचारक' का गुण नहीं है–

(A) सेवा कार्य का पूर्ण ज्ञान

(B) रोगी से द्वेष पूर्ण बात करना

(C) चतुरता

(D) पवित्रता

10. रोगी के गुण बताये गये हैं–

(A) निर्भयता

(B) स्मरण शक्ति

(C) वैद्य के आज्ञाओं के पालन की प्रवृत्ति

(D) उपर्युक्त सभी

11. 'कारणं षोडशगुणं सिद्धौ पादचतुष्टयम्' का सम्बन्ध मुख्यतया है–

(A) चिकित्सक से

(B) परिचारक से

(C) रोगी से

(D) उपर्युक्त सभी से

12. चिकित्सा में प्रधान कारण माना गया है–

(A) रोगी

(B) वैद्य

(C) औषधि

(D) उपचारक

13. जाते हुए प्राणों को जो लौटा लाता है, वह कहलाता है–

(A) प्राणापसर

(B) प्राणाभिसर

(C) अभिसर

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

14. राजा का चिकित्सक होने योग्य होता है–

(A) हेतु (निदान) का ज्ञान

(B) लिङ्ग (रोगों के लक्षण) का ज्ञान

(C) प्रशमन (रोगों की शान्ति के उपाय) का ज्ञान

(D) उपर्युक्त सभी

15. चिकित्सा के सम्बन्ध में वार्तालाप हुआ है–

(A) आत्रेय एवं गार्गी के बीच

(B) मैत्रेय एवं अपाला के बीच

(C) आत्रेय एवं मैत्रेय के बीच

(D) गार्गी एवं अपाला के बीच

16. चरकसंहिता के **दशम अध्याय** का मान है–

(A) चतुष्पाद

(B) महाचतुष्पाद

(C) त्रिपाद

(D) सपाद

17. वैद्य होता है–

(A) स्वतन्त्र

(B) परतन्त्र

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) कोई नहीं

18. मन होता है–

(A) संकल्प विकल्पात्मक

(B) साधनात्मक

(C) रागात्मक

(D) उपर्युक्त सभी

19. बुद्धि है–

(A) निश्चयात्मिका

(B) चञ्चल

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) कोई नहीं

20. चरक संहिता के लेखक हैं–

(A) अग्निवेश

(B) अमर

(C) तानसेन

(D) काफूर

21. वाग्भट थे–

(A) सुश्रुत से परवर्ती

(B) सुश्रुत से पूर्ववर्ती

(C) वैदिक काल में

(D) आधुनिक काल में

22. आयुर्वेद का प्रतिपादभ मिलता है–

(A) ऋग्वेद में

(B) अथर्ववेद में

(C) सामवेद में

(D) धनुर्वेद में

23. चिकित्सा के चार चरण है–

(A) वैद्य

(B) औषधि

(C) परिचारक

(D) उपर्युक्त सभी

24. रोग शान्ति में प्रधान कारण है–

(A) वैद्य

(B) परिचारक

(C) वातावरण

(D) उपर्युक्त सभी

25. रोग है–

(A) धातु की समता

(B) धातु की विषमता

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) कोई नहीं

26. स्वास्थ्य है–

(A) धातु समता

(B) धातु विषमता

(C) धातु विद्रूप

(D) उपर्युक्त सभी

27. अनुकूल वेदनीयता है–

(A) दुःख

(B) सुख

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) कोई नहीं

28. प्रतिकूलवेदनीयता है–

(A) सुख

(B) दुःख

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) कोई नहीं

29. भिषक् का अभिप्राय है–

(A) रोगी

(B) परिचारक

(C) वैद्य

(D) वातावरण

30. धातुविकार है–

(A) स्वास्थ्य

(B) रोग

(C) परिचारक

(D) वैद्य

31. अष्टांगहृदय के रचयिता हैं–

(A) वाग्भट

(B) मम्मट

(C) वामन

(D) दण्डी

32. शल्यचिकित्सा का विवेचन मिलता है–

(A) अष्टांगहृदय में

(B) गीता में

(C) उपर्युक्त दोनों में

(D) कोई नहीं

33. शौच का अभिप्राय है–

(A) शुद्धता

(B) अशुद्धता

(C) राग

(D) द्वेष

34. शम है–

(A) मनोनिग्रह

(B) दुःख

(C) सुख

(D) ज्ञान

35. दम है–

(A) इन्द्रिय निग्रह

(B) ज्ञान

(C) तप

(D) धर्म

36. कर्मेन्द्रियाँ हैं–

(A) 2

(B) 3

(C) 5

(D) 4

37. ज्ञानेन्द्रियाँ हैं–

(A) 2

(B) 3

(C) 4

(D) 5

38. उभयेन्द्रिय है–

(A) बुद्धि

(B) आत्मा

(C) मन

(D) तन

39. शालाक्य का विवेचन है–

(A) अष्टांगहृदय में

(B) काव्यालंकार में

(C) गीता में

(D) महाभारत में

40. सेवाकर्म गुण है–

(A) वैद्य का

(B) परिचारक का

(C) द्रव्य का

(D) स्थिति का

41. अज्ञानी वैद्य बनता है–

(A) मृत्यु का कारण

(B) अमरता का कारण

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) कोई नहीं

42. वाग्भट का समय है–

(A) 7 वीं शताब्दी ई० पूर्व

(B) प्रथम शताब्दी ई० पूर्व

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) कोई नहीं

43. कायचिकित्सा का वर्णन मिलता है–

(A) अष्टांगहृदय में

(B) महाभारत में

(C) भागवत पुराण में

(D) उपर्युक्त सभी

44. आयुर्वेद के ज्ञाता थे–

(A) आत्रेय

(B) मैत्रेय

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) कोई नहीं

45. वैद्य को होना चाहिए–

(A) धनलोलुप

(B) कृपण

(C) सेवाभाव युक्त

(D) उपर्युक्त सभी

46. वैद्यचिकित्सा प्रारम्भ करते हैं–

(A) साध्यासाध्य विचार करके

(B) साध्य विचार करके

(C) असाध्य विचार करके

(D) कोई नहीं

47. क्षीण धातु व्यक्ति का उपचार होता है–

(A) पौष्टिक औषधि से

(B) सामान्य औषधि से

(C) उपर्युक्त दोनों से

(D) उपर्युक्त किसी से नहीं

48. स्मरण शक्ति गुण है–

(A) रोगी का

(B) परिचारक का

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) कोई नहीं

49. साधनयुक्त होता है–

(A) रोगी

(B) वैद्य

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) उपर्युक्त दोनों नहीं

50. अष्टांग हृदय ग्रन्थ है–

(A) आयुर्वेद का

(B) धर्मशास्त्र का

(C) उपर्युक्त दोनों का

(D) कोई नहीं

*****

Group – 3 : SAN 312 (Bhartiya Vastushastra-II)

1. मुहूर्त्तचिन्तामणि के रचयिता हैं–

   (A) टोडरमल्ल

   (B) दैवज्ञ राम

   (C) चण्डिका प्रसाद

   (D) रामरत्न अवस्थी

2. मुहूर्त्तचिन्तामणि के मङ्गलाचरण में स्तुति है–

   (A) सरस्वती की

   (B) गणेश की

   (C) शिव की

   (D) विष्णु की

3. राम दैवज्ञ के पिता का नाम है–

   (A) कर्माकर

   (B) मधुसूदन दैवज्ञ

   (C) अनन्त दैवज्ञ

   (D) इनमें से कोई नहीं

4. प्रतिपदा तिथि का स्वामी है–

   (A) ब्रह्म

   (B) अग्नि

   (C) दुर्गा

   (D) सर्प

5. नवमी तिथि की स्वामिनी है–

   (A) पार्वती

   (B) दुर्गा

   (C) आदिति

   (D) दिति

6. 'ब्रह्मा' देवता है–

(A) द्वितीया तिथि का

(B) प्रतिपदा का

(C) अष्टमी का

(D) नवमी का

7. पूर्णमासी का स्वामी है–

(A) रवि

(B) चन्द्र

(C) मंगल

(D) बुध

8. अमावस्या का स्वामी है–

(A) चन्द्रमा

(B) कामदेव

(C) पितर

(D) गणेश

9. चतुर्थी तिथि का स्वामी है–

(A) सूर्य

(B) अग्नि

(C) चन्द्रमा

(D) गणेश

10. चतुर्दशी तिथि का स्वामी है–

(A) शिव

(B) कामदेव

(C) अग्नि

(D) पितर

11. प्रतिपदा, षष्ठी एवं एकादशी तिथियों की संज्ञा है–

(A) नन्दा

(B) भद्रा

(C) जया

(D) रिक्ता

12. द्वितीया, सप्तमी एवं द्वादशी तिथियों की संज्ञा है–

(A) रिक्ता

(B) भद्रा

(C) जया

(D) नन्दा

13. चतुर्थी, नवमी एवं चतुर्दशी तिथियों की संज्ञा है–

(A) नन्दा

(B) रिक्ता

(C) भद्रा

(D) जया

14. घटो ऋषो गौर्मिथुनं मेषकन्याऽलितौलिनः धनुः कर्को मृगः सिंहश्चैत्रादौ शून्यराशयः उक्त कारिका के अनुसार चैत्रादि महीनों में कुम्भादि राशियाँ होती हैं–

(A) शून्य

(B) अशून्य

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

15. प्रतिपदा तिथि में तुला एवं मकर राशि में करने चाहिए–

(A) शुभ कार्य नहीं करने चाहिए

(B) शुभ कार्य करना चाहिए

(C) गृह प्रवेश करना चाहिए

(D) विवाह करना चाहिए

16. पञ्चमी तिथि में हस्त नक्षत्र और रविवार को शुभ कर्मो का त्याग–

(A) नहीं करना चाहिए

(B) करना चाहिए

(C) यात्रारम्भ करना चाहिए

(D) इनमें से कोई नहीं

17. मङ्गल के दिन अश्विनी नक्षत्र में गृहप्रवेश यात्रा और विवाह–

(A) वर्जित है

(B) प्रशस्त है

(C) कोई दोष नहीं है

(D) उपर्युक्त दोनों गलत है

18. अन्धाक्ष नक्षत्र में वस्तु चोरी होने पर ?

(A) उपाय करने पर वस्तु प्राप्ति

(B) बिना उपाय किये ही वस्तु प्राप्ति

(C) अप्राप्ति

(D) उपुर्यक्त तीनों सत्य हैं

19. धनिष्ठा, पुण्य, रोहिणी, पूर्वाषाढ़ , विशाखा उत्तरा फाल्गुनी और रेवती नक्षत्रों की संज्ञा है–

(A) मन्दाक्ष

(B) अन्धाक्ष

(C) मध्याक्ष

(D) सुलोचन

20. स्वाती, पुनर्वसु ,श्रवण, कृन्तिका, उत्तराभाद्र पथ मूल और पूर्वाफाल्गुनी की संज्ञा है–

(A) अन्धाक्ष

(B) मध्याक्ष

(C) सुलोचन (स्वक्ष)

(D) मन्दाक्ष

21. मूहुर्त्तचिन्तामणि विभक्त है–

(A) अध्यायों में

(B) सर्गों में

(C) प्रकरणों में

(D) विरामों में

22. गृह प्रवेश का भेद है–

(A) अपूर्व

(B) अन्धाक्ष

(C) मध्याक्ष

(D) इनमें से कोई नहीं

23. सूर्य का सम्बन्ध है–

(A) मन से

(B) बुद्धि से

(C) आत्मा से

(D) उक्त किसी से नहीं

24. चन्द्रमा कारक ग्रह है–

(A) आत्मा का

(B) बुद्धि का

(C) मन का

(D) इन्द्रिय का

25. बुद्धि का कारक ग्रह है–

(A) चन्द्रमा

(B) बुध

(C) सूर्य

(D) राहू

26. श्रवण, उत्तराषाढ़, रोहिणी एवं तीनों उत्तरा में गुरू व गुरू का दिन में गृहारम्भ बनाता है–

(A) वैद्यव्य योग

(B) राजयोग

(C) निर्धनयोग

(D) इनमें से कोई नहीं

27. वास्तु भूमि के पूर्व और उत्तर में ऊँची होने पर होता है–

(A) सम्मान की प्राप्ति

(B) पुत्र और धन का नाश

(C) धन की प्राप्ति

(D) इनमें से कोई नहीं

28. वास्तु में पूर्व दिशा का देवता है–

(A) कुबेर

(B) यम

(C) इन्द्र

(D) वरूण

29. वास्तु में पश्चिम दिशा का देवता है–

(A) यम

(B) कुबेर

(C) इन्द्र

(D) वरूण

30. वास्तु में पशुग्रह शौचालय होने चाहिए–

(A) ईशान में

(B) आग्नेय में

(C) वायव्य में

(D) नैऋत्य में

31. धान्य गृह, आयुध गृह, अग्नि गृहादि का परिमाण (लम्बाई + चौड़ाई) होती है–

(A) परिमिट

(B) अपरिमिट

(C) 40 हस्त

(D) 36 हस्त

32. चौसठ पदीय वृत्ताकार वास्तु में वृत्तों की संख्या होगी–

(A) 2

(B) 3

(C) 4

(D) 6

33. 84 पदीय त्रिभुजाकार वास्तु मे त्रिभुजों की संख्या होगी–

(A) 2

(B) 5

(C) 4

(D) 3

34. माघ मास में गृह प्रवेश करने से होता है–

(A) हानि

(B) लाभ

(C) यात्र

(D) वैघव्य

35. पौष–चैत्रादि मासों में किया गया गृह प्रवेश होता है–

(A) पुत्रलाभ

(B) धनलाभ

(C) विजय

(D) शत्रुभयकारक

36. गृहप्रवेश के लिए त्याज्य मास से है–

(A) चैत्र

(B) अश्विन–पौष

(C) आषाढ़–भाद्रपद

(D) उपर्युक्त सभी

37. गृह प्रवेश के लिए उत्तम मास है–

(A) माघ–फाल्गुन

(B) गुरूवार–शुक्रवार

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

38. गृह प्रवेश के लिए शुभवार है–

(A) सोम–बुध

(B) गुरू–शुक्र

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

39. गृह प्रवेश के शुभ नक्षत्र है–

(A) रोहिणी–मृगशिरा

(B) उत्तरा फा०–पुष्य

(C) चित्रा–धनिष्ठा

(D) उपर्युक्त सभी

40. रमेश नामक व्यक्ति को नगवा ग्राम में वास्तु निर्माण से होगा–

(A) लाभ

(B) हानि

(C) सुवर्ण प्राप्ति

(D) रजत–प्राप्ति

41. अवकहड़ा चक्र में स्वरों का मान है–

(A) 2

(B) 4

(C) 1

(D) 6

42. यदि ग्राम की काकिड़ी 5 है और व्यक्ति की काकिड़ी 2 है तो वह व्यक्ति के लिए होगी–

(A) लाभदायक

(B) अशुभ

(C) दोषपूर्ण

(D) इनमें से कोई नहीं

43. जिसकी काकिड़ी अधिक है वह कम काकिड़ी वाले के लिए होगी–

(A) समभाव

(B) लाभदायक

(C) क्षतिकारक

(D) इनमें से कोई नहीं

44. वास्तु के जिस अङ्ग में शल्य होगा उससे गृह स्वामी को होगी–

(A) उसके विपरीत अङ्ग में पीड़ा

(B) उसी अङ्ग में पीड़ा

(C) पीड़ा नहीं होगी

(D) उपर्युक्त कोई नहीं

45. जिस गृह के द्वार का किवाड़ बिना खोले खुल जाय तो गृह में रहने वाले को–

(A) उन्माद होगा

(B) राजभय होगा

(C) लाभ होगा

(D) इनमें से कोई नहीं

46. जिस गृह के द्वार बिना बन्द किए बन्द हो जाय तो गृह में रहने वाले–

(A) कुल की वृद्धि होगी

(B) कुल का नाश होगा

(C) कुल में शान्ति होगी

(D) इनमें से कोई नहीं

47. यदि गृह द्वार दैर्ध्य की ऊँचाई से कम दूरी पर कूप या खम्भे से विद्ध होता है तो वह है–

(A) अशुभ

(B) शुभ

(C) लाभ

(D) इनमें से कोई नहीं

48. गृह द्वार मार्ग से वेधित होने पर–

(A) कुल का नाश होता है

(B) गृह स्वामी की मृत्यु होती है

(C) बालकों में दोष आ जाता है

(D) इनमें से कोई नहीं सही है

49. सोम और भल्लाट देवता हैं–

(A) पूर्व दिशा के

(B) पश्चिम दिशा के

(C) उत्तर दिशा के

(D) दक्षिण दिशा के

50. गन्धर्व और वितथ देवता हैं–

(A) पूर्व दिशा के

(B) दक्षिण दिशा के

(C) पश्चिम दिशा के

(D) इनमें से कोई नहीं

*****

Group – 4 : SAN 314 (Jyotishshastra ke Moolbhoot Sidhant-II)

1. गणितं ________ स्थितम्।

   (A) मूर्हिनं

   (B) शिष्टे

   (C) काये

   (D) हस्ते

2. शीघ्रबोध ग्रन्थ है–

   (A) ज्योतिष का

   (B) साहित्य का

   (C) दर्शन का

   (D) व्याकरण का

3. शीघ्रबोध की भाषा है–

   (A) कठिन

   (B) सरल

   (C) उपर्युक्त दोनों

   (D) कोई नहीं

4. शीघ्रबोध के लेखक हैं–

   (A) काशीनाथ भट्टाचार्य

   (B) रमानाथ

   (C) सोमनाथ

   (D) गयानाथ

5. पंचम भाव सम्बन्धित है–

   (A) द्वेष से

   (B) ईर्ष्या से

   (C) सन्तान से

   (D) उपर्युक्त सभी से

6. विवाह नक्षत्र का प्रतिपादन है–

(A) शीघ्रबोध में

(B) थला प्रबोध में

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) कोई नहीं

7. चान्द्र है–

(A) गुरू से सम्बद्ध

(B) चन्द्रमा से सम्बद्ध

(C) सूर्य से सम्बद्ध

(D) राहू से सम्बद्ध

8. रिक्ता होती है–

(A) वर्ण

(B) तिथि

(C) वार

(D) कोई नहीं

9. कुटुम्ब की आर्थिक स्थिति को दर्शाता है–

(A) द्वितीय भाव

(B) तृतीय भाव

(C) चतुर्थ भाव

(D) पञ्चम भाव

10. सुख दर्शाता है–

(A) द्वितीय भाव

(B) चतुर्थ भाव

(C) तृतीय भाव

(D) उपर्युक्त सभी

11. शुक्र के पापग्रह के साथ होने पर–

(A) विवाह शीघ्र होता है

(B) समायोजन अच्छा होता है

(C) धनार्जन नहीं होता है

(D) विवाह में समस्या होती है

12. विवाह के प्रकार हैं–

(A) 1

(B) 2

(C) 8

(D) 3

13. विवाह है–

(A) संस्कार

(B) आश्रम

(C) वर्ण

(D) विधि

14. मेष है–

(A) समूह

(B) गण

(C) राशि

(D) गोचर

15. कन्या है–

(A) ग्रह

(B) गोचर

(C) दिवस

(D) राशि

16. आर्यभट्टीय लिखा है–

(A) भास्कर ने

(B) आर्यभट्ट ने

(C) उमाचार्य ने

(D) उपर्युक्त सभी

17. लीलावती के रचनाकार हैं–

(A) भास्कराचार्य

(B) निम्बार्क

(C) बल्लभ

(D) उपर्युक्त सभी

18. भासों की गणना होती है–

(A) गणक

(B) चान्द्रमास

(C) क्षयणक

(D) उदार्य

19. वर्ष की गणना होती है–

(A) चान्द्र मास से

(B) मन्दसौर मास से

(C) सौरमास से

(D) सौरऊर्जा से

20. विक्रम संवत् चलाया–

(A) अशोक ने

(B) बिन्दुसार ने

(C) चाणक्य ने

(D) विक्रमादित्य ने

21. अश्विनी है–

(A) नक्षत्र

(B) राशि

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) कोई नहीं

22. नक्षत्र है–

(A) चैत्र

(B) कृत्तिका

(C) श्यामा

(D) वरुणा

23. भीत ग्रह होता है–

(A) अभारी

(B) पश्चसारी

(C) अग्रसारी

(D) अतिसारी

24. विकल ग्रह होता है–

(A) विग्रह

(B) लुप्त

(C) साधन

(D) मार्ग

25. विवाह में मंगल प्रदायक है–

(A) रोहिणी

(B) उत्तरा

(C) रेवती

(D) उपर्युक्त सभी

26. विवाह में मंगल कारक हैं–

(A) 11 नक्षत्र

(B) 2 नक्षत्र

(C) 1 नक्षत्र

(D) 20 नक्षत्र

27. 'माघे ________' में रिक्त स्थान पर होगा–

(A) धनवती कन्या

(B) बलवती कन्या

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) कोई नहीं

28. फाल्गुन में कन्या होती है–

(A) विकला

(B) सुभगा

(C) चित्रा

(D) विशाखा

29. पत्नी पति प्रिया होती है–

(A) वैशाख में विवाह होने पर

(B) ज्येष्ठ में विवाह होने पर

(C) उपर्युक्त दोनों महीनों में

(D) इनमें से किसी महीने में नहीं

30. उत्तरा भाद्रप्रद है–

(A) नक्षत्र

(B) दिन

(C) मास

(D) वर्ष

31. रेवती है–

(A) राशि

(B) नक्षत्र

(C) दिन

(D) माह

32. आर्द्रा है–

(A) नक्षत्र

(B) राशि

(C) फल

(D) विष

33. पुनर्वसु है–

(A) राशि

(B) नक्षत्र

(C) तिथि

(D) वार

34. पुष्य है–

(A) नक्षत्र

(B) राशि

(C) फल

(D) उपर्युक्त सभी

35. एक क्षण के बराबर है–

(A) निरलव

(B) निमेष

(C) दशमलव

(D) निर्मिमेष

36. कला है–

(A) एक मुहूर्त

(B) दो मुहूर्त

(C) एक होरा

(D) एक घड़ी

37. शीघ्रबोध के अनुसार गति नहीं है–

(A) देवगति

(B) मनुष्यगति

(C) नरकगति

(D) स्वर्गगति

38. शीघ्रबोध के अनुसार जाति की संख्या है–

(A) 05

(B) 06

(C) 07

(D) 08

39. शीघ्रबोध के अनुसार काया है–

(A) दीर्घकाय

(B) अपकाय

(C) लघुकाय

(D) मसकाय

40. शीघ्रबोध में शरीर बताए गए है–

(A) चार

(B) पाँच

(C) दश

(D) बीस

41. इन्द्रिय नहीं है–

(A) श्रोत्

(B) चक्षु

(C) घ्राण

(D) प्राण

42. शीघ्रबोध के अनुसार प्राण हैं–

(A) दश

(B) बारह

(C) आठ

(D) तीस

43. शीघ्रबोध में रस नहीं माना गया है–

(A) श्रृंगार

(B) वीर

(C) वात्सल्य

(D) करूण

44. शीघ्रबोध के अनुसार तत्त्व नहीं है–

(A) देव

(B) गुरू

(C) अर्थ

(D) धर्म

45. शीघ्रबोध के अनुसार दृष्टि का भेद नहीं है–

(A) सम्यग्दृष्टि

(B) मिथ्यादृष्टि

(C) मिश्रदृष्टि

(D) दूरदृष्टि

46. शीघ्रबोध में वर्णित ध्यान नहीं है–

(A) आर्तध्यान

(B) रौद्रध्यान

(C) धर्मध्यान

(D) अन्तर्ध्यान

47. जिससे प्रत्यक्ष ज्ञान होता है वह है–

(A) शरीर

(B) इन्द्रिय

(C) संज्ञा

(D) वेद

48. वस्तु तत्त्व को विपरीत जानना है–

(A) बुद्धि

(B) संज्ञा

(C) अज्ञान

(D) ज्ञान

49. शीघ्रबोध के अनुसार विनय के भेद है–

(A) दश

(B) बीस

(C) तीस

(D) चालीस

50. शीघ्रबोध के अनुसार शुद्धता का भेद नहीं है–

(A) मनशुद्धता

(B) वाक्शुद्धता

(C) काय शुद्धता

(D) दन्तशुद्धता

*****

Group – 5 : SAN 316 (Nitayanamitiyik Anushthan-II)

1. संस्कार शब्द का मूल अर्थ है ?

   (A) शुद्धिकरण

   (B) सृष्टिकरण

   (C) सरलीकरण

   (D) उपर्युक्त सभी

2. संस्कारों की संख्या है–

   (A) 16

   (B) 14

   (C) 15

   (D) 13

3. गर्भाधान संस्कार को और भी नाम से जाना जाता है–

   (A) निषेचन

   (B) अवगाहन

   (C) निषेक

   (D) स्थापन

4. गर्भाधान संस्कार का उद्‌देश्य है ?

   (A) पितृऋण से मुक्ति

   (B) सृष्टि का विकास

   (C) उत्तम सन्तान की प्राप्ति द्वारा सुख प्राप्ति की कामना

   (D) उपर्युक्त सभी

5. गर्भाधान संस्कार के लिए क्षेत्र (खेत) रूप माना गया है–

   (A) पुरूष

   (B) स्त्री

   (C) उपर्युक्त दोनों को

   (D) शुक्र को

6. गर्भाधान संस्कार किया जाता है–

(A) विषयानन्द की प्राप्ति हेतु

(B) वैषयिक सुख की प्राप्ति हेतु

(C) उत्तम सन्तान की प्राप्ति हेतु

(D) इनमें से कोई नहीं

7. 16 संस्कारों में जन्म से पूर्व के संस्कार हैं–

(A) 02

(B) 03

(C) 01

(D) 05

8. पुंसवन संस्कार का क्रम आता है–

(A) गर्भाधान संस्कार के बाद प्रथम संस्कार

(B) सीमन्तोनयन संस्कार के पूर्व का संस्कार

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

9. व्यास स्मृति के अनुसार, गर्भाधान संस्कार के बाद पुंसवन संस्कार किया जाता है ?

(A) 02 मास पश्चात्

(B) 03 मास पश्चात्

(C) 04 मास पश्चात्

(D) इनमें से कोई नहीं

10. पुंसवन संस्कार को जाना जाता है–

(A) क्षेत्र संस्कार के नाम से

(B) क्षेत्रज्ञ संस्कार के नाम से

(C) उपर्युक्त दोनों सही है

(D) इनमें से कोई नहीं

11. सीमन्तोन्नयन संस्कार गर्भाधान के बाद सम्पन्न होता है–

(A) 06 माह में

(B) 08 माह में

(C) 06 अथवा 08 माह में

(D) उपर्युक्त सभी

12. सीमन्तोन्नयन संस्कार से सन्तान के अंग पर शुभ प्रभाव पड़ता है–

(A) हृदय पर

(B) हाथ–पैर पर

(C) मुख पर

(D) मस्तिष्क पर

13. जन्म के पश्चात् सर्वप्रथम सम्पन्न होने वाले संस्कार का नाम है ?

(A) चौल कर्म

(B) अन्न प्राशन

(C) जातकर्म

(D) इनमें से कोई नहीं

14. जातकर्म संस्कार जन्म लेने पर सम्पन्न किया जाता है ?

(A) पुत्र के

(B) पुत्री के

(C) केवल पुत्र के

(D) केवल पुत्री के

15. जातकर्म संस्कार सम्पन्न होता है–

(A) नालच्छेदन से पूर्व

(B) अन्नप्राशन से पूर्व

(C) निष्क्रमण के पूर्व

(D) चौलकर्म से पूर्व

16. पारस्करगृह्यसूत्र के अनुसार अन्नप्राशन संस्कार जन्म के माह में सम्पन्न करना चाहिए–

(A) 5 वें मास में

(B) 6ठवें मास में

(C) 8 वें मास में

(D) उपरोक्त सभी में

17. अन्नप्राशन संस्कार में अन्न को बच्चे को खिलाया जाता है–

(A) हवन से पवित्र हाणिज्यान्न को

(B) मधु को

(C) घृतयुक्त पायस को

(D) उपरोक्त सभी को

18. मुण्डन संस्कार पर्याय है–

(A) निष्क्रमण संस्कार का

(B) अन्नप्राशन संस्कार का

(C) उपरोक्त दोनों का

(D) चौल कर्म संस्कार का

19. मनुस्मृति में चौलकर्म संस्कार का समय बतलाया गया है ?

(A) प्रथम वर्ष में

(B) तृतीय वर्ष में

(C) उपर्युक्त दोनों में

(D) इनमें से कोई नहीं

20. चौलकर्म संस्कार वृद्धि के लिए किया जाता है–

(A) बल के

(B) आयु के

(C) तेज के

(D) उपर्युक्त सभी के

21. यज्ञोपवीत संस्कार को नाम से जाना जाता है–

(A) उपनयन संस्कार

(B) ब्रतवन्ध संस्कार

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

22. षोडश संस्कारों में सबसे प्रमुख संस्कार माना जाता है ?

(A) अन्न प्राशन को

(B) चौलकर्म को

(C) उपनयन को

(D) उपर्युक्त सभी को

23. उपनयन संस्कार होता है ?

(A) ब्राह्मणों के लिए

(B) क्षत्रियों के लिए

(C) वैश्यों के लिए

(D) उपर्युक्त सभी के लिए

24. द्विज कहा जाता है–

(A) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को

(B) क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र को

(C) ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र को

(D) इनमें से कोई नहीं को

25. तैत्तिरीय संहिता के अनुसार मनुष्यों के ऋण होते हैं–

(A) एक

(B) दो

(C) तीन

(D) चार

26. व्यक्ति पितृ ऋण से मुक्त होता है ?

(A) गृहस्थ आश्रम का सम्यक पालन करके

(B) सन्तानोत्पत्ति से

(C) उपर्युक्त दोनों के पालन से

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

27. आचार्य पारस्कर ने ब्राह्मणों की उपनयन संस्कार की अवधि बतलायी है ?

(A) जन्म से 08 वर्ष

(B) जन्म से 06 वर्ष

(C) जन्म से 11 वर्ष

(D) जन्म से 12 वर्ष

28. संस्कार के अनन्तर विवाह संस्कार होता है–

(A) उपनयन संस्कार

(B) विद्यारम्भ संस्कार

(C) समावर्तन संस्कार

(D) उपरोक्त में से कोई नहीं

29. संस्कार के पश्चात् प्रत्येक स्त्री–पुरूष पूर्णता को प्राप्त करते हैं ?

(A) समावर्तन संस्कार के

(B) विद्यारम्भ संस्कार के

(C) उपनयन संस्कार के

(D) विवाह संस्कार के

30. सनातन संस्कृति (भारतीय परम्परा) में विवाह है–

(A) धार्मिक संस्कार

(B) सामाजिक संस्कार

(C) राजनैतिक संस्कार

(D) उपर्युक्त सभी संस्कार

31. संस्कार में सप्तपदी का प्रयोग किया जाता है ?

(A) उपनयन संस्कार में

(B) विवाह संस्कार में

(C) उपरोक्त दोनों संस्कारों में

(D) उक्त सभी संस्कारों में

32. विवाह संस्कार में वर को स्वीकार किया गया ?

(A) ब्रह्मा का स्वरूप

(B) महादेव का स्वरूप

(C) विष्णु का स्वरूप

(D) सूर्य का स्वरूप

33. विवाह संस्कार में महादान कहा जाता है ?

(A) द्रव्य दान को

(B) पशुदान को

(C) उपरोक्त दोनों को

(D) कन्यादान को

34. कन्या को लक्ष्मी स्वरूप में स्वीकार किया गया है ?

(A) उपनयन संस्कार में

(B) समावर्तन संस्कार में

(C) विवाह संस्कार में

(D) उपर्युक्त में से किसी में नहीं

35. गृहारम्भ संस्कार होता है–

(A) समावर्तन संस्कार के बाद

(B) विवाह संस्कार के बाद

(C) विद्यारम्भ संस्कार के बाद

(D) उपनयन संस्कार के बाद

36. गृह–प्रवेश होना चाहिए–

(A) स्थान देवता के पूजन के बाद

(B) वास्तु देवता के पूजन के बाद

(C) कुल देवता के पूजन के बाद

(D) उपर्युक्त सभी दवेता के पूजन के बाद

37. गृह कहा जाता है ?

(A) जिसमें गृहिणी का निवास हो

(B) जिसमें पुरूष का निवास हो

(C) जिसमें बच्चों का निवास हो

(D) इनमें से कोई नहीं

38. गृह प्रवेश करना चाहिए ?

(A) शुभ समय में

(B) शुभ नक्षत्र में

(C) शुभ योग में

(D) उपर्युक्त सभी में

39. कन्या का गोत्र पिता के गोत्र के स्थान पर पति का गोत्र हो जाता है ?

(A) पाणिग्रहण के पश्चात्

(B) कन्यादान के पश्चात्

(C) सप्तपदी पूर्ण होने के पश्चात्

(D) सिन्दूर दान के पश्चात्

40. प्राग्जन्म संस्कारों में प्रथम संस्कार है–

(A) गर्भाधान

(B) पुंसवन

(C) सीमन्तोन्नयन

(D) जातकर्म

41. 'संस्कार' शब्द का अर्थ है–

(A) सरलीकरण

(B) शुद्धिकरण

(C) तुष्टिकरण

(D) उपर्युक्त सभी

42. 'संस्कार' शब्द में उपसर्ग है–

(A) सं

(B) कृ

(C) सम्

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

43. 'संस्कार' शब्द में धातु है–

(A) कृ

(B) क्रि

(C) क्री

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

44. 'संस्कार' में प्रत्यय है–

(A) सम्

(B) कृ

(C) क्तिन्

(D) घञ्

45. संस्कारों का उल्लेख है–

(A) वेदों में

(B) स्मृति ग्रन्थों में

(C) पुराणों में

(D) उपर्युक्त सभी में

46. पारस्कर गृह्य सूत्र में पहला संस्कार वर्णित है–

(A) गर्भाधान

(B) सीमन्तोन्नयन

(C) अन्त्येष्टि

(D) विवाह

47. पञ्चमहायज्ञों में गणना नहीं होती है–

(A) देवयज्ञ

(B) पितृयज्ञ

(C) भूतयज्ञ

(D) प्रेतयज्ञ

48. पारस्कर गृह्यसूत्र का सम्बन्ध है–

(A) ऋग्वेद से

(B) कृष्ण यजुर्वेद से

(C) शुक्ल यजुर्वेद से

(D) उपर्युक्त किसी से नहीं

49. षडर्घ्य का अधिकारी नहीं है–

(A) आचार्य

(B) वर

(C) स्नातक

(D) प्रतिवेसी

50. गृह्यसूत्र नहीं है–

(A) पारस्कर

(B) आश्वलायन

(C) मौद्गल्यायन

(D) कौषीतकि

*****